ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८ १२५

बुलेटिन संख्या-३२
दिनांक-मंगलवार,२३ अप्रैल,२०१६

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः ३५.५ एवं २०.३ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ६५ सुबह में एवं दोपहर में ३८ प्रतिशत, हवा की औसत गति ३.६ कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण ७.४ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन ९.१ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में २७.३ एवं दोपहर में ३६.८ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(२४ से २८ अप्रैल,२०१६)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी २४ से २८ अप्रैल, २०१६ तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल देखे जा सकते हैं। हाँलाकि इस अवधि में मौसम के आमतौर पर शुष्क रहने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान ३५ से ३७ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान २३ से २५ डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- इस अवधि में औसतन ५-१० कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से पूरवा हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ७० से ७५ प्रतिशत तथा दोपहर में ४० से ५० प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- पूर्वानुमानित अवधि में मौसम के शुष्क रहने की संभावना को देखते हुए किसान भाई गेहू की कटनी एवं दौनी के कार्य को प्राथमिकता दें। कटाई के बाद गेहूँ को पुरी तरह सुखाकर भंडारित करें। भंडारण के लिए जुट के बोरे की व्यवस्था कर लें। एवं बोरे को पलटकर अच्छी प्रकार धुप में सुखाकर कीट रहित कर लें।
- बसंतकालीन मक्का, पिछात बोयी गई रवी मक्का, प्याज, सब्जियों की फसल एवं चारा फसलों में सिंचाई शाम के समय में करें। ध्यान दें कि, सिंचाई करते समय हवा की गति कम हों।
- रबी फसल की कटाई के बाद खाली खेतों की गहरी जुताई कर खेत को खुला छोड़ दें ताकि सुर्य की तेज धुप मिट्टी में छिपे किड़ों के अण्डे, प्युपा एवं घास के बीजों को नष्ट कर दें।
- शुष्क एवं गर्म मौसम थ्रिप्स कीट के फैलाब के लिए अनुकूल है। इस मौसम में इनकी संख्या चरम तक पहूँच जाती है। अतः प्याज में थ्रिप्स कीट की निगरानी करें। इनकी संख्या अधिक पाये जाने पर प्रोफेनोफॉस ५० ई०सी० दवा का १.० मि०ली० प्रति लीटर पानी या इम्डिाक्लोप्रिड दवा का १.० मी.ली. प्रति ४ लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।
- भिण्डी में फल एवं प्ररोह वेधक कीट की निगरानी करें। इसके पिल्लू भिण्डी के शीर्ष प्ररोह, पुष्प एवं फल को नुकसान पहुचाती है। इस कीट से बचाव हेतु सर्वप्रथम क्षतिग्रस्त पौधे के भागों व अक्रान्त फल की तुराई कर खेत से अलग कर दें एवं इसके बाद मैलाथियान ५० ई०सी० दवा का १ मि० ली० या डाइमेथोएट ३० ई०सी० का १.५ मि० ली० प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- लत्तर वाली सब्जियों जैसे नेनुआ, करैला, लौकी (कद्दू), और खीरा फसलों में फल मक्खी कीट की निगरानी करें। इन फसलों को क्षति पहुचाने वाला यह प्रमुख कीट है। यह घरेलू मक्खी की तरह दिखाई देने वाली भूरे रंग की होती है। मादा कीट मुलायम फलों की त्वचा के अन्दर अंडे देती है। अंडे से पिल्लू निकलकर अन्दर ही अन्दर फलों के भीतरी भाग को खाता है। जिसके कारण पूरा फल सड़ कर नष्ट हो जाता है। इस कीट का प्रकोप शुरू होते ही १ किलोग्रम छोआ, २ लीटर मैलाथियान ५० ई०सी० को १००० लीटर पानी मे घोल कर प्रति हेक्टेयर की दर से १५ दिनों के अन्तराल पर दो बार छिड़काव करें।
- मूंग व उरद् की फसलों में सघन रोमोवाली सुंडिया की निगरानी करें। इनके सुंडियो के शरीर के उपर काफी घने बाल पाये जाते है। यह मूंग एवं उरद् के पौधों के कोमल भागों विशेषकर पत्तियों को खाती है। इनकी संख्या अधिक रहने पर कभी-कभी केवल डण्ठल ही शेष रह जाती है। इस प्रकार इस कीट से फसल को काफी नुकसान एवं उपज में काफी कमी आती है। रोक-थाम हेतु फसल में मिथाइल पैराथियान ५० ई०सी० दवा का २ मि०ली०/लीटर या क्लोरपाईरिफॉस २० ई०सी० दवा का २.५ मि०ली०/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल में छिडकाव करें।
- आम एवं लीची के बगीचों में नमी बनाये रखें। आम के पेड़ में मिलीबग (दहिया कीट) की निगरानी करें। यह कीट चिपटे गोल आकार के पंखहीन तथा शरीर पर सफेद दही के रंग का पॉउडर चिपका रहता है। यह आम के पेड़ में मुलायम डालों और मंजर वाले भाग में बहुतो की संख्या में चिपका हुआ देखा जा सकता है तथा यह उन हिस्सों से लागातार रस चुसता रहता है जिससे अक्रान्त भाग सुख जाता है तथा मंजर झड़ जाते हैं। इस कीट से रोकथाम हेतु डाइमेथोएट ३० ई०सी०दवा का १.० मि०ली०/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर पेड़ पर समान रुप से छिडकाव करें।
- बसंतकालीन मक्का में तना छेदक कीट की निगराणी करें। वर्त्ततान मौसम इस कीट के फैलाव के लिए अनुकूल है। अण्डे से निकलने के बाद इस कीट की छोटी-छोटी सुंडियॉ मक्का की कोमल पत्तियों को खाती है तथा मध्य कलिका की पत्तियों के बीच घुसकर तने में पहूँच जाती है तथा गुद्दा को खाती हुई जड़ की तरफ बढ़ते हुए सुरंग बनाती है। फलस्वरुप मध्य कलिका मुरझाई हुई नजर आती है जो बाद में सुख जाती है। इस प्रकार पौधे की बढ़वार रुक जाती है एवं उपज में काफी कमी आती है। इस कीट के रोक-थाम हेतु क्लोरपाईरिफॉस २० ई०सी० दवा का २.५ मि०ली०/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल में समान रुप से छिडकाव करें।

आज का अधिकतम तापमानः ३४.४ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से २.१ डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः २३.५ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से १.६ डिग्री सेल्सियस अधिक

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी